L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
B.A PAPER- 01
PSYCHOLOGY (Honours)
Topic- Ebbinghaus theory of forgetting.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor
Guest Teacher.
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsbg2018@gmail.com.

विस्मरण के क्षेत्र में अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इन सिद्धांतों में अनुप्रयोग-अभाव का सिद्धांत सबसे पुराना है। इस सिद्धान्त का आधार यह है कि व्यक्ति जब किसी विषय को सीखता है, तो उसके मस्तिष्क में एक प्रकार का चिह्न बनता है। उस चिह्न को मनोवैज्ञानिकों ने स्मृति-चिह्न (memory trace) कहा है। यह स्मृति-चिह्न कुछ मजबूत तथा कुछ कमजोर बनता है, परन्तु सीखने के बाद जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, वैसे-वैसे यह स्मृति-चिह्न कमजोर होता जाता है तथा मिटता जाता है। जब तक स्मृति-चिह्न अस्तित्व में वर्तमान रहता है, तभी तक सीखा गया विषय याद रहता है। जैसे-जैसे समय व्यवधान के कारण यह मिटता है, वैसे-वैसे हम सीखे गये विषय को भूलते चले जाते हैं। इस विचार के समर्थकों की यह मान्यता है कि विस्मरण एक निष्क्रिय स्वाभाविक प्रक्रिया है जो समय व्यवधान के कारण स्वतः होती है।

इस संबंध में एबिंगहॉस (Ebbinghaus) ने अपना प्रयोगात्मक अध्ययन किया है। उन्होंने अपना अध्ययन निरर्थक पदों पर किया, इसके लिए एबिंगहॉस ने बारह सौ (1200) ऐसे पदों का निर्माण किया जिसका कोई अर्थ

II

नहीं निकलता है। निरर्थक पदों के निर्माण के लिए एबिंगहॉस ने पदों में दोनों ओर consonant और बीच में एक vowel को रखा जैसे- XEZ, QAW आदि। एबिंगहॉस ने स्वयं प्रयोज्य (subject) के रूप में काम किया, इन पदों को उन्होंने याद किया और विभिन्न समय अन्तरालों में उसकी जाँच की, उन्होंने देखा कि सीखने के 20 मिनट बाद 42% एक दिन बाद 60%, दो दिन बाद 72% 6 दिन में 75% तथा 31 दिनों में 79% विस्मरण हुआ। इसके आधार पर उन्होंने एक वक्र का निर्माण किया, जिसे एबिंगहॉस की विस्मरण वक्र कहा जाता है। इस प्रयोग के आधार पर विस्मरण के स्वरूप की व्याख्या करते हुए उन्होंने निम्नलिखित बातें बतलाई है।

(i) सीखने के बाद जैसे-जैसे समय व्यतीत होता है, वैसे-वैसे विस्मरण की मात्रा बढ़ती है। समय अन्तराल बढ़ता है। समय अन्तराल बढ़ने से धारण में कमी होती है और विस्मरण की मात्रा में वृद्धि होती है।

(ii) सीखने के तुरन्त बाद विस्मरण की गति तेज होती है और अधिक समय बीतने पर विस्मरण कम होती है। एबिंगहॉस के प्रयोग में 20 मिनट के समय अन्तराल में 42% विस्मरण हुआ जबकि 31 दिनों बाद विस्मरण 79% हुआ।

(iii) लेकिन किसी विषय को सीखते हैं तो उसे पूरी तरह से नहीं भूलता है, कुछ न कुछ धारण मस्तिष्क में बाकी रह जाता है।

इस सिद्धान्त के समर्थन में अन्य कई मनोवैज्ञानिकों ने अपना प्रयोगात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। ब्राउन ने अर्थपूर्ण सामग्री पर अध्ययन किया, अपने प्रयोग में ब्राउन (Brown) ने 4-7 सेकेण्ड

के प्रयोग अन्तर्गत केवल धारणा का मापन किया, संख्या
की अवस्थाओं में किया गया, पहली अवस्था में
रिहर्सल को नियंत्रित किया गया तथा दूसरी अवस्था
में रिहर्सल को नियंत्रित नहीं किया गया, परिणाम स्वरूप
उन्होंने देखा कि पहली अवस्था में जिसमें रिहर्सल
को नियंत्रित किया गया था, उसकी विस्मरण अधिक
हुआ, दूसरी अवस्था में भूलने की मात्रा कम रही,
अनुप्रयोग - भंग सिद्धांत के पक्ष में पीटर्सन ने भी समर्थन
व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि यह व्यक्ति की
अवस्था में ही सीखा हो गया था, उसके द्वारा प्रतिस्थापित
के प्रभावों की मात्रा की व्याख्या पूर्वोन्मुख - अवरोध
के आधार पर नहीं की जा सकती है। इस सिद्धान्त
के पक्ष में मिल्टन ने कहा है कि short term
memory का सूचना अपने - आप समाप्त
होती रहती है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि संवेदनाओं के विचारों
को अनेक मनोवैज्ञानिक ने समर्थन किया है। परन्तु
इस सिद्धान्त के आलोचकों का भी रह कमजोर
बताया है। जिन्होंने प्रयोगात्मक प्रमाणों के आधार
पर इस सिद्धान्त के विरुद्ध कई आपत्तियाँ
उठाई है।

आलोचनाएँ :-

(1) इस सिद्धान्त के विरोध में मूल्ड - चिकित्सक आदि
मनोवैज्ञानिकों ने विस्मरण के अन्य अनेक कारणों की
चर्चा की है। इन लोगों ने संवेदनाओं के रूप विकार
का विरोध किया कि विस्मरण केवल व्यवधान के
कारण होता है। इन लोगों ने कहा कि संवेदनाओं
ने बताते हुए प्रयोग अन्तर्गत में कुछ आलोचनाएँ भी

(v)

क्रियाओं को मनोविश्लेषण ने मूल्य नहीं के बिना उनकी अवधान के कारण –

(ii) मनोविश्लेषक ने अपना अध्ययन असामान्य व्यक्तियों पर किया – जबकि निष्कर्ष सामान्य व्यक्तियों के दैनिक जीवन में ठीक-ठाक लागू नहीं है। अतः इसमें विश्लेषण की प्रक्रिया जटिल हो जाती है। यदि मनोविश्लेषक अपना अध्ययन सामान्य व्यक्तियों पर किया होता तो निष्कर्ष कुछ और ही प्राप्त होता।

(iii) मनोविश्लेषक ने कहा है कि सीखने के बाद अभ्यास नहीं किया जाता है तो उसकी भावनाएँ होने पर विस्मरण हो जाती है। परन्तु इस प्रकार के विस्मरण पर यह बात लागू नहीं होती है। क्योंकि साइकिल चलाना सीख जाता है तो वर्षों के बाद तक अभ्यास नहीं करने के बावजूद वह उसे नहीं भूलता है। इसमें कुछ विभाग की जानकारी रह जाता है। तथा कुछ को देर से बदलने में बाद की नई जानकारी को पकड़ लेने में बहुत दिनों तक याद रहती है, जबकि बाद की जानकारी नये विषय का रूप लेती है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date- 06/08/2020.
Sub- Psychology